Santoshi Mata Ki Katha

प्राचीन समय में एक गरीब ब्राह्मण परिवार का पुत्र था, जिसे उसके सौतेले भाई बहुत तंग करते थे। वह अत्यंत दयनीय स्थिति में जीवनयापन कर रहा था। एक दिन वह अपने घर से दूर किसी और नगर में रोजगार की तलाश में निकल पड़ा। कुछ वर्षों की मेहनत के बाद उसने धन अर्जित कर लिया और वह अपने परिवार को सहायता भेजने लगा। लेकिन उसकी भाभियां उससे ईर्ष्या करने लगीं और उन्होंने उसे घर वापस बुलाकर उसकी संपत्ति हड़पने की योजना बनाई।

घर लौटने के बाद उसकी भाभियों ने उसे झूठे आरोपों में फंसा दिया और उसे बहुत परेशान किया। वह अत्यंत दुखी हुआ और किसी उपाय की खोज में मंदिर गया। वहाँ उसे एक वृद्ध महिला मिली, जिसने उसे बताया कि यदि वह संतोषी माता का व्रत रखे और श्रद्धा से उनकी पूजा करे, तो उसकी सभी परेशानियां दूर हो जाएंगी।

उसने माता की भक्ति में लीन होकर १६ शुक्रवार तक संतोषी माता का व्रत रखा और कथा सुनी। माता संतोषी की कृपा से उसकी सारी परेशानियां समाप्त हो गईं, उसका खोया हुआ सम्मान लौट आया और उसे धन-धान्य एवं परिवार का सुख प्राप्त हुआ।